Gyanvividha, Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025 : PP-160-164

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025
Page No.- 160-164
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

डॉ. शिवा नन्द बाजपेयी
प्राच्यसंस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

Corresponding Author :

डॉ. शिवा नन्द बाजपेयी
प्राच्यसंस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

भारतीय ज्ञान परम्परा में पञ्चमहाभूत की वैज्ञानिकता : एक दृष्टि

शोधसार : भारतीय ज्ञान परम्परा पञ्च तत्वों को ब्रह्माण्ड की आधारभूत संरचना माना जाता है ये वैदिक दर्शन के गहराई में समाहित हैं। भारत के प्राचीन ग्रंथों, वेदों में वर्णन है कि ये तत्व किस प्रकार मिलकर जीवन का निर्माण और पोषण करते हैं। पञ्च महाभूत केवल भौतिक वस्तुएं ही नहीं हैं ये कई गुणों और ऊर्जाओं से भी जुड़े हैं। जो ब्रह्माण्ड और मानव शरीर दोनों को नियंत्रित करते हैं। प्रत्येक तत्व भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महाभूत तत्वों की विस्मृति से ही हम उन्हीं तत्वों को दूषित कर रहे हैं जिनसे हमें जीवन मिलता है। वैदिक समय में प्राकृतिक तत्वों के प्रति श्रद्धा तथा कृतज्ञता का भाव रहता था। आधुनिक समय में उसके लोप से हमारे वातावरण और जीवन के बीच असंतुलन हो गया है।

कूटशब्द : पञ्चमहाभूत, तत्व, शरीर, पदार्थ, जीवन, पर्यावरण, प्रकृति, प्रदूषण संस्कृति।

प्रस्तावना : सामान्यतः मानव समाज जो कुछ भी पदार्थ इस जगत में देखता है, वे सभी किसी न किसी पदार्थ के अवयवों के सम्मिश्रण से बनते हैं। सूक्ष्मेक्षिकया सभी पदार्थ मृदा, जल, ताप, वायु (कोई सी गैस)तथा आकाश के संयोग से ही बनते हैं। इन्हीं पदार्थों को भारतीय संस्कृति महाभूत के रुप में देखती है।

भू सत्तायाम् धातु से भूतकाल के अर्थ में क्त प्रत्यक्ष होने पर सिद्ध होता है। (धातुपाठ:1/1,)। अर्थात जिसकी सत्ता थी, जो विद्यमान था, किन्तु अब भी सत्ता से युक्त है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश इन पञ्च-महाभूत कहा जाता है। इस परिभाषा के अन्तर्गत संसार का कोई भी पदार्थ बिना पृथ्वी आदि के नहीं रहता है। अर्थात सभी इन्हीं के

संयोग से बनते हैं। यहां तक कि भारतीय दर्शन परम्परा में महाभूत से ही सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण कहा गया है।

तस्माद् वा एतस्मादात्मन आकाश:सम्भूत:।
आकाशवाद् वायु:।
वायोरग्नि:। आग्नेराप:। अद्भ्य: पृथ्वी। ओषधीभ्योऽन्नम्।
(तैत्तिरीयोपनिषद्3/1/2)

मुण्डकोपनिषद में पञ्च-महाभूत को विराट् पुरुष का शरीर कहा गया है। सांख्य दर्शन में प्रकृति पुरुष के संयोग से इस जगत -प्रपञ्च में 25 तत्वों में पंञ्चमहाभूतों की गणना है।

प्रकृतेर्महांस्ततोऽहंकारस्तस्माद् गणश्च षोडशक:।
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्य:पञ्चभूतानि।।
(सांख्यकारिका 22)

अर्थात प्रकृति से महत्, महत् से अहंकार, अहंकार से षोडश इन्द्रिय और तन्मात्राओं से पञ्च-महाभूत उत्पन्न होते हैं।

ब्रह्माण्ड के निर्माण में जितने भी तत्व हैं वे ही हमारे शरीर के भी तत्व हैं और यदि ब्रह्माण्ड के इन कारकों में विकृति उत्पन्न होती है तो स्वाभाविक रूप से हमारे शरीर में भी विकृति उत्पन्न होगी। अर्थात हम पञ्च तत्वों से बने होने के बाद भी उसका विश्लेषण नहीं करते हैं।

आज का युग विज्ञान का युग कहा जाता है। तकनीकी और औद्योगिक क्रान्ति से दु:साध्य कार्य भी सहज और सरल तरीकों से हो जाते हैं। इसके चलते हुए मानव समाज विविध प्रकार के रासायनिक पदार्थों का सेवन करने लगा है। जिससे उसकी आयु भी परिमित होती चली जा रही है।

वेद ज्ञान-विज्ञान के आदि स्रोत हैं, वेद ज्ञान स्वयं प्रकाश है, देश-काल से अपरिच्छिन्न तथा देवता मनुष्यों का सदा विद्यमान रहने वाला चक्षु है वेदचक्षु: सनातनम्। और विज्ञान तो ज्ञान का अनुभव अर्थात ज्ञान का प्रायोगिक पक्ष कहलाता है अनुभवस्त्वन्त्यं प्रमाणम्। सभी पदार्थ पञ्च भूतों से निर्मिति के कारण से समस्त प्रकृति, मानव एवं पर्यावरण के लिए हितकर हैं। ऐसे में पंञ्चमहाभूतों से उत्सृष्ट मानव के लिए रासायनिक पदार्थों का प्रयोग आपत्तये ही हैं।

पृथ्वी- महाभूतों में सर्वप्रथम पृथ्वी है, जो मानव एवं अन्य बहुसंख्यक प्राणियों के जीवन का मूल आधार है। अथर्ववेद में 63मन्त्रों के द्वारा भूमि के स्वरूप का स्पष्टतया वर्णन प्राप्त होता है। इसमें माता भूमि:पुत्रोऽहं पृथिव्या:। (अथर्ववेद संहिता 12/1/12) अर्थात भूमि और मानव का सम्बन्ध मातृत्व और पुत्रत्व का सम्बन्ध बताया गया है इसी से मानव दुग्ध आदि पेय पदार्थ, आहार, औषधियां तथा वनस्पतियां और सम्पदा प्राप्त होती है। भूमि विश्वम्भरा अर्थात भरण-पोषण करने वाली होती है।

हमारे ऋषि मुनि दूरद्रष्टा होने के साथ-साथ अन्वेषक भी थे। और आजकल में किए जा रहे गुरुत्वाकर्षण के विषय में पहले से ही कह गये हैं - मल्वं बिभ्रती गुरुभृद्। (अथर्ववेद संहिता 12/1/48)। एक अन्य सूक्त से ज्ञात होता है कि ऋषि-मुनि पृथ्वी को सजीव मानते थे। और इसमें प्राण, रक्त और आत्मा विद्यमान है- भूम्या असुरसृगात्मा क्वस्वित् को विद्वांसमुपगात् प्रष्टुमेतत्। (अथर्ववेद संहिता 9/9/4)। संरक्षण हो जाने पर पृथ्वी हमारे लिए कामदुधा, विश्वगर्भा और पयोदुघा के रूप में प्रस्तुत हो जाती है। अत एव आज इस पृथ्वी तत्व पर हो रहे सभी प्रकार के प्रदूषण रुपी अत्याचारों को समाप्त करने की आवश्यकता है।

जल- अथर्ववेद में जल विषयक पूरे तीन सूक्त प्राप्त होते हैं। जल देवी या दिव्या आप:। (1/4/3)। अर्थात अन्तरिक्ष से वर्षा द्वारा प्राप्त जल वार्षिकी अप् है, सिन्धु नदी, अनूप्या खनित्रिम और ध्वन्य (मरुभूमि)आदि विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होता है। जल के अमृतत्व और औषधीय गुणों के लिए कहा गया है- अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्, अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा

भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनी:। (अथर्ववेद संहिता 1/4/4)तथा आपो विश्वस्य भेषजीय:। (3/7/5)।

तैत्तिरीयारण्यक में मूर्छित जन पर जलसेचन के लिए कहा गया है-

आपस्तस्माद्भिरवन्तामभिषिञ्चति
नार्तिमाच्छति सर्वमायुरेति। (तैत्तिरीयारण्यक 5/6/22)।

इस प्रकार पञ्च तत्वों में जल का महत्वपूर्ण स्थान है। सृष्टि की प्रक्रिया में जल से पृथ्वी की उत्पत्ति मानी गयी है। मानव शरीर में 60प्रतिशत जल तत्व और 40प्रतिशत अन्य तत्व है। प्रदूषण रहित जल साक्षात् ईश्वर -स्वरुप है। जल जगत के प्राण हैं, जिसमें सभी भूत और भुवन है। इस कारण तत्कालीन लोग नदियों को स्वच्छता एवं पवित्रता रखते हैं, आधुनिकता की होड़ में हम अपने कर्तव्यों को भूलते जा रहे हैं। जिससे हमें आगे और भी समस्याओं का सामना करना पडेगा। क्योंकि दूषित जल से अनेक बीमारियां होती हैं।

ज्योतिष शास्त्र में भी सृष्टि की उत्पत्ति जल से ही प्रमाणित की गई है। जल के स्रोतों के निर्माण में ज्योतिष शास्त्र के महत्व के विषय में बताया गया है। जलाशय के खनन के कार्य का प्रारंभ भी ज्योतिष के अनुसार उक्त मुहूर्तों में तड़ाग, वापी, कूप इत्यादि के शुभ समय को बताया गया है-

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात् पक्षे सिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा।। (मुहूर्त चिंतामणि, नक्षत्र प्रकरण 2/257)।

आरण्यक ग्रन्थों में जल की उपयोगिता के विषय में उल्लेख किया गया है तैत्तिरीय आरण्यक में पंचमहाभूतों के जल तत्व की व्याख्या में बताया गया है आपमापामप: सर्वा:। अस्मादस्मारितोऽमुत:। अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संचस्करद्रिया, इति।

सामवेद संहिता में जल तत्व के विषय में विविध प्रकार का विभिन्न अध्यायों में वर्णन है जिसमें जल को सोम की संज्ञा दी गयी है

प्राणा शिशुर्महीना हिन्वन्नूतस्य दीधितिम्।
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता। (सामवेद 3/10/108)

वेदों में नदियों को राष्ट्र की मोक्षदायिनी और प्राण दायिनी शक्ति बताई गई है जो उस प्रदेश में रहने वाले सभी प्राणियों की रक्षक होती है। ऋग्वेद के नदी सूक्त में सम्पूर्ण मन्त्रों में 42 नदियों का उल्लेख है-

प्र सु व आपो महिमानमुत्तमं कारुर्योचाति सदने विवस्वत:।
प्र सप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमु: प्र सृत्वरीणामति सिन्धुरोजसा। (10/75/1/9)

वायु- जीवन के लिए प्राण स्वरूप शुद्ध वायु परम अनिवार्य है। इसके अभाव में जीवन का अस्तित्व ही असम्भव है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार जो वहता है वह पवन के रूप में प्राण है-प्राणो वाऽइदं सर्वं योऽयं पवते स प्राण:। (शतपथ ब्राह्मण 11/1/617)। तैत्तिरीय संहिता के अनुसार वायु प्राण के देवता हैं -वायुदेवत्यो वै प्राण:। (6/37/4)। वायु को अन्तरिक्ष का देवता बताया जाता है- वायुरन्तरिक्षस्याधिपति:। (अथर्ववेद 5/24/8)।

यास्क ने आयु की व्याख्या वायु से की है क्योंकि वह गमन करती है तथा दूसरों को गति प्रदान करती है। शरीर के निर्माण में वायु तत्व का भी योगदान है। जिस वायु को हम ग्रहण करते हैं उसे प्राणवायु कहते हैं। सम्पूर्ण शरीर में पांच प्रकार की वायु संचरित होती है। यद्यपि हम वायु को दूषित करते हैं तो अनायास ही वहीं दूषित वायु हमारी प्राण वायु वन कर विकार उत्पन्न करेगी।

वैदिक संस्कृति में अग्निहोत्र के द्वारा प्रदूषित वायु को शुद्ध करने का एक आधार है। आधुनिक काल में आवश्यकता से अधिक दुरूपयोग प्राकृतिक संसाधनों का किया जा रहा है। विज्ञान के अनुसार वायु में 78 प्रतिशत नाइट्रोजन, 21प्रतिशत आक्सीजन और शेष कार्बन डाइऑक्साइड है। वायु स्वच्छता के

लिए वृक्ष लगाने और उनके संरक्षण को धर्म से जोड़ा गया है। पर्यावरण के प्रत्येक कारक के संरक्षण तथा संवर्धन हेतु मनुष्य की अन्तश्चेतना को जागृत करने के साथ ही प्रकृति के साथ पर्याप्त अनुकूलता का सिद्धांत वैदिक पद्धति में प्रतिपादित किया गया है।

वायु देवों में मुख्य है क्योंकि यही जलों को धारण करता है। पुनः वृष्टि रुप में वही जल बरसाता है जिससे अन्न, वनस्पति इत्यादि का निर्माण होता है तथा-

देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन्कृन्तत्रादेषामुपरा उदायन्
त्रयस्यन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बूबूकं वहतः पुरीषम्। (ऋग्वेद 10/27/23)। अतः वायु सभी मनुष्यों द्वारा संरक्षणीय है-शं न इषिरो अभिवातु वातः। (7/35/4)। शीघ्र चलने वाला वायु हम लोगों के लिए सुखरूप हो और सब ओर से बहे। ऋग्वेद के दशम मंडल में प्रार्थना करते हुए लिखा है-

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् परः।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे। (10/137/3)

अर्थात हे वायु!आप व्याधियों का निवारण करने वाली कल्याणकारी औषधियों को लेकर आये है, जो अहितकर मल है, उसे यहां से बहाकर ले जायें आप संसार के लिए औषधिरुप कल्याणकारी, देवदूत बनकर सर्वत्र संचार करते हैं।

आकाश- सृष्टिक्रम के अनुसार आकाश प्रथम महाभूत है। जो मूल प्रकृति से स्थूल होकर बना है। तात्पर्य यह है कि परमात्मा से प्रथम आकाश, तदनन्तर वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, औषधियां और अन्न की उत्पत्ति हुई है (तैत्तिरीयोपनिषद् 3/2/1)। अन्तरिक्ष अथवा आकाश विशाल है यह सभी देवताओं का आयतन है-अन्तरिक्षं वै सर्वेषां देवानामायतनम्। (शतपथ ब्राह्मण 14/3/2/6। आकाश का साक्षात् सम्बन्ध वायु से है-वायुराकाशे प्रतिष्ठितम्। (तैत्तिरीय उपनिषद्)। आकाश के स्वच्छ होने पर स्वच्छ वायु, पृथ्वी का केन्द्र (हृदय) भी है- तुभ्यं वात : पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापां। (अथर्ववेद 8/1/5)।

निरुक्त में आकाश की निरुक्ति इस प्रकार की गयी है-न काशते पृथिव्यादिवत् अप्रत्यक्षत्वात्। अर्थात पृथिवी आदि की तरह अप्रत्यक्ष होने के कारण यह प्रकाशित नहीं होता है। शरीर के अन्दर यही एक मात्र अनीश्वर है। आकाश के बिना भी मानव की स्थिति सम्भव नहीं होता है। शब्दों की गति आकाश में होती है। मानव का शब्द से घनिष्ठ सम्बन्ध है। ध्वनि का सीधा सम्बन्ध आकाश से है। आज ध्वनि प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। आकाश भी विविध कारणों से प्रदूषित होता जा रहा है। आकाश के प्रदूषित हो जाने से इसका कुप्रभाव मानवों एवं जीवों पर पड़ना स्वाभाविक है।

वैदिक समय में मुनि हमारे पूर्वज नित्य यज्ञ करते थे मन्त्रोच्चारण करते थे जिससे आकाशस्थ मण्डल स्वच्छ रहता था। आधुनिक समय में वाहनों, स्पीकरों, यंत्रों के आवाज से सम्पूर्ण आकाश मण्डल प्रदूषित हो गया है। जब कटु, असत्य, अभद्र, पापपूर्ण तथा निरर्थक शब्दों के उच्चारण से बचने एवं भद्र बोलने से (अन्तरिक्ष) आकाश सदैव मधुमय होता है-
मधुमन्नो भवत्यन्तरिक्षम्। (अथर्ववेद 20/143/8)।

अग्नि- अग्नि सभी अच्छे कर्मों में अग्रणी होती है1-अग्रणीर्भवति, 2-अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते, 3-अङ्गं नयति सन्नममानः।। यज्ञ मनुष्य का प्रधान कर्म है। यज्ञों में सर्वप्रथम अग्नि का ही आधान होता है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त अग्नि सूक्त हैं।

अग्निमीळे पुरोहितों यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्। (ऋग्वेद 1/1/1)
अग्निःपूर्वेभिऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवा एह क्षति।
(ऋग्वेद 1/1/2)।

निरुक्त में अग्नि की सत्ता दो रूपों में मानी गयी है –
1-विद्युत रुप में, 2-सूर्य रुप में।
अग्नि तीन प्रकार की होती है-
1-दावाग्नि, 2-वडवाग्नि, 3-जठराग्नि।

दावाग्नि पार्थिव अग्नि का वाचक है। ऐतिहासिको के अनुसार सर्वप्रथम मानवों ने अग्नि का ही अनुसंधान किया। आज जल से विद्युत का निर्माण होता है मानव के विकास हेतु अग्नि का महत्वपूर्ण स्थान है। यन्त्रों के संचालन, प्रकाश, रेलयान आदि आज विद्युत से ही संचालित होते हैं। अतः विद्युत रूप में अग्नि का भौतिक जीवन में सर्वाधिक महत्व रखता है।

निष्कर्ष : भारतीय ज्ञान परम्परा के पांच तत्व पृथ्वी, जल, तेज, आकाश और वायु माने गये हैं। यह पांच तत्व ही मिलकर ब्रह्माण्ड की संरचना करते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा का उद्देश्य प्राचीन और पारम्परिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ एकत्रित करके इन पंचमहाभूतों की व्याख्या पर सामान्य समझ विकसित करना है। वर्तमान आधुनिक समय में हम अनियोजित विकास की आंधी में आने वाली पीढ़ियों, वनस्पतियों एवं पारिस्थितिकी तन्त्र को नष्ट करने जा रहे हैं। धरती और मानवता के लिए हमें आधुनिक विज्ञान के साथ साथ पारम्परिक ज्ञान को एकत्रित करते हुए जन सामान्य तक प्रसारित करना होगा। अन्तरिक्ष की विशालता से लेकर पृथ्वी की ठोसता तक पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश में पांच तत्व मिलकर अस्तित्व का ताना बाना बुनते हैं। ये मूलभूत निर्माण खण्ड केवल भौतिक पदार्थ नहीं है, की संस्कृतियों में इनका गहरा अर्थ है, ये हमारे और ब्रह्माण्ड के भीतर की शक्तियों, गुणों और सम्बन्धों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. शास्त्री, सीताराम, सांख्यकारिका (चौखम्भा सुभारती प्रकाशन), 2022.
2. तैत्तिरीयोपनिषद (गीता प्रेस, गोरखपुर), 2012.
3. गैरोला, वाचस्पति, वैदिक साहित्य और संस्कृति (चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली), 1997.
4. शास्त्री, ज्ञानप्रकाश, निरुक्त (परिमल प्रकाशन), 2016.
5. गोयन्द, हरिकृष्णदास, ईशादि नौ उपनिषद् (गीता प्रेस, गोरखपुर), 2017.
6. झा, सुन्दर नारायण, शतपथ ब्राह्मण (चौखम्भा ओरियन्टालिया), 2021.
7. पाण्डेय, देवीसहाय, अथर्ववेद संहिता (चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान), 2023.
8. द्विवेदी, कपिल देव, वेदों में विज्ञान (विश्वभारती अनुसंधान परिषद), 2014.
9. गुप्त, डॉ. सोमेश्वर, वैदिक वांड्मय में विज्ञान (महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान), 1994.
10. शास्त्री, शंकर लाल, संस्कृत वांड्मय में पर्यावरण (हंसा प्रकाशन, जयपुर), 2008.

•